खिन एक लेहु लटक

खिन एक लेहु लटक भंजाए।
जनमत ही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए।।

हे जीव निमख के नाटक में, तूं रह्यो क्यों बिलमाए।
देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभू पाए।।

आपको पृथीपति कहावे, ऐसे केते गए बजाए।
अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए।।

जीव रे चतुरमुख को छोड़त नाहीं, जो करता सृष्ट केहेलाए।
चारों तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंच्यो आए।।

पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए।
अवसर ऐसो जान के तूं प्राणपति लौ लाए।।

देखन को ए खेल खिन को, लिए जात लपटाए।
महामत रूदे रमे तांसों, उपजत जाकी इछाए।।